

॥ जय श्रीराम ॥ जय हनुमान ॥

हनुमान अष्टक

पढ़ें, समझें और सभी संकटों से रक्षा करें

⇒ हनुमान अष्टक के लाभ ⇒

- सभी संकट, भय और कष्टों से रक्षा
- हिम्मत, शक्ति और आत्मविश्वास प्रदान करें
- स्वास्थ्य, सुख, समृद्धि और सफलता दिलाएं
- नकारात्मक ऊर्जा दूर करें, सकारात्मकता भरें

भुत-प्रेत, नजर दोष और वज्र बाधा से मुक्ति
सर्व को शांति भक्ति में बुद्धि करें
सर्व वीरों वही सब से मुक्ति मुक्ति सौक उबारो

संकटमोचन हनुमान जी की आठ महागाथाएँ

- भुत-गुरान, ओढ़ रखे सबन सुगोदरे
- मन की गति और भक्ति में बुद्धि करें
- घर-परिवार में सुख, शांति और समृद्धि लाएं

1 बाल समय रवि भक्ष लियो तब तीनहुं लोक भयो अंधियारो

2 बालि की त्रास कपीस बसैं गिरि चौकि महामुनि साप दियो तब

3 अंगद के संग लेन गए सिय खोज लाए सिया-सुधि प्राण उबारो

4 रावन त्रास दई सिय को सब दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो

6 रावन जुयें उरान क्षिण के, सब आनि सजैवन प्राण उबारो

7 बंधु समेत जवै अहिरावन ले संहारो अहिरावन सखासै समेत

8 काज किए बदै देवन के तुम हे संकटमोचन संकट टारो

लाल देह लाली लेसे, अरु धरा लाल लंगूर। वज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर॥

❖❖❖ जय श्रीराम, जय हनुमान, जय हनुमान ❖❖❖

हनुमान अष्टक

बाल समय रवि भक्ष लियो तब तिनहु लोक भयो अंधियारों ।
ताहि सो त्रास भयो जग को, यह संकट काह सो जात न टारो ।
देवन आन करी बिनति तब, छाड़ि दियो रवि कष्ट निवारो ।
को नहीं जानत है जग में कपि संकट मोचन नाम तिहारो ।

बालि की त्रास कपिस बसैं गिरि, जात महाप्रभ पंथ निवारो ।
चौकिन महामुनि साप दियो तब, चाहिए कौन बिचार बिचारो ।
कैदविज रूप लिवाय महाप्रभु, सो तुम दास के सोक नीवारो ।
को नहीं जानत है जग में कपि संकट मोचन नाम तिहारो ।

अंगद के संग लेन गए सिय, खोज कपिस यह बैन उचारो ।
जीवत न बचिहों हम सो जू, बिना सुधि लाये इहां पगु धारो ।

हेरी थके तट सिन्धु सबे तब, सिया सुधि प्राण उबारो।
को नहीं जानत है जग में, कपि संकटमोचन नाम तिहारो।

रावनत्रास दई सिय को सब, राक्षसी सों कही सोक निवारो,
ताहि समय हनुमान महाप्रभु, जाए महा रजनीचर मारो ।
चाहत सिय असोक सों आगि सु, दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो।
को नहीं जानत है जग में, कपि संकटमोचन नाम तिहारो।

बाण लाग्यो उर लछिमन के तब, प्राण तजे सुत रावन मारो।
लै गृह बैध सुषेन समेत , तबै गिरि द्रोण सु बीर उपारो।
आनि सजीवन हाथ दिए तब, लछिमन के तुम प्राण उबारो।
को नहीं जानत है कपि संकट मोचन नाम तिहारो।

रावन जुध अजान कियो तब, नाग की फांस सबै सिर डारो।
श्रीरघुनाथ सहित सबै दल, मोह भयो या संकट भारो।
आनि खंगेस तबै हनुमान जु , बंधन काटि सुत्रास निवारो।
को नहीं जानत है जग में कपि, संकट मोचन नाम तिहारो।

बन्धु समेत जबै अहिरावन, लै रघुनाथ पाताल सिधारो।
देबिन्हि पूजि भली विधि सो बलि , दैउ सबै मिलि मंत्र विचारो।
जाये सहाय भयो तब ही, अहिरावन सैन्य समेत संहारो।
को नहीं जानत है जग में, कपि संकट मोचन नाम तिहारो,

काज किये बड़ देवन के तुम, बीर महाप्रभु देखि बिचारो।
कौन सो संकट मोर गरीब को, जो तुमसे नहीं जात है टारो।
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु, जो कच्छु संकट होए हमारो।
को नहीं जानत है जग में कपि, संकटमोचन नाम तिहारो।

दोहा

लाल देह लाली लसे, अरु धरी लाल लंगूर।
बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर।

जय श्री राम, जय जय हनुमान